सर्वभूतहिते रताः वसुधैव कुटुम्बकम्

हे नाथ! मैं जैसा भी हूँ, आपका हूँ।
हे प्रभो! आप जैसे भी हो, मेरे हो।।
हे नाथ! मैं आपको भूलूँ नहीं।

यह भी नहीं रहेगा

THIS TOO SHALL PASS

हे नाथ ! LED को निमित्त बनाकर परम सन्त रामसुखदासजी महाराज के विश्वोपयोगी शरणानन्दजी महाराज के प्रति चौकानेवाले विचार-

LED से भी ज्यादा अनमोल Box तथा Pamphlet है-सुरक्षित रखें

रामसुखदासजी महाराज का अवतरण सन्देश

शरणानन्दजी के समान मैं मानता नहीं हूँ किसी सन्त को। मेरे हृदय में बात है यह। और मेरी दृष्टि में बहुत अच्छे महात्मा है वो। उनसे बढ़कर महात्मा मेरे को दिखता नहीं है। ऐसी विचित्र बातें बताई है जो आदमी के एकदम कान खुल जाएँ आंख खुल जाएँ। बड़े-बड़े दर्शन / दार्शनिक पण्डितों में भी हलचल मच जाएगी। मेरे मन से अगर आप पूछो तो नए दार्शनिक थे। ज्ञानयोग में, भक्तियोग में, कर्मयोग में विलक्षण बातें बताई है। अकाट्य है, उनकी बातों को काट नहीं सकता कोई, खंडन नहीं कर सकता। छहों दर्शनों से निराला दर्शन है उनका। - स्वामीजी के प्रवचन से

कोई और नहीं, कोई गैर नहीं.

Pamphlet QR

Printed Box QR

कुछ न चाहो, काम आ जाओ.

हिन्दू, मुसलमान, ईसाई आदि सभी लाभ उठा सके इसलिए अद्वितीय शरणानन्दजी की क्रान्तिकारी वाणी में एक-देशीय साधना की चर्चा कभी नहीं की जाती है। सर्वमान्य शुद्ध सत्य को देश, काल, मत, वर्ग, सम्प्रदाय, मज़हब का भेद छू नहीं सकता है।

यह सब बातें किसीकी भावना को ठेस पहुँचाना नहीं है, बल्कि गुरु निष्ठा है। KMSS 79888 86115

यह कार्य कायदे के नहीं फायदे के दृष्टिकोण से किया जा रहा है!

गीतामर्मज्ञ रामसुखदासजी ने विश्व को सत्य के अनुयायी बनने का परामर्श दिया है, व्यक्ति या सम्प्रदाय का नहीं। शरणानन्दजी की बातें सम्पूर्ण शास्त्रों का अन्तिम तात्पर्य है।

भारत षट्दर्शन (छः दर्शन) के लिए प्रसिद्ध हैं, जिनमें देवी-देवताओं के प्रसंग व स्तुतियाँ हैं। परन्तु शरणानन्दजी महाराज का दर्शन सातवाँ दर्शन (मानव दर्शन) है, जिसमें मानव की स्तुति की गयी है। मानव जीवन की महिमा का वर्णन जितना व जिस प्रकार उनके दर्शन व साहित्य में किया गया है, वह अन्य किसी दर्शन व साहित्य में नहीं है। -रामसुखदासजी महाराज, तरुतले पुस्तक से...

Ek Adwitiya Sant PDF

विश्व हितैषी स्वामी रामसुखदासजी के हृदय में ही सत्य अर्थात शरणानन्दजी है। इसलिए गीताप्रेस आदि से प्रकाशित उनकी करोड़ों पुस्तकों तथा असंख्य प्रवचनों का अवलोकन करने पर आपको शरणानन्दजी की क्रान्तिकारी बातों के अंश मिलेंगे-ही-मिलेंगे। रामसुखदासजी महाराज के एक अद्वितीय सन्त पत्र में लिखा है कि- "मैं शरणानन्दजी के भावों का ही प्रचार करता हूँ।"

शरणानन्दजी की क्रांतिकारी विचारधारा में साधक को किसी के पदचिन्हों पर नहीं चलना है, अपितु निज विवेक के प्रकाश में रहना है अर्थात स्वाधीनता से अपनी आँखों देखना हैं, अपने पैरों चलना हैं। जब शास्त्र या परमात्मा के नाम पर आनेवाली पीढ़ी भटकेगी तो परमात्मा और किसी धर्म विशेष का नाम लिए बिना "मानवता" की प्रतिष्ठा कर देना शरणानन्दजी की अपनी अभूतपूर्व विशिष्टता है। www.swamisharnanandji.org

सब का साथ - सब का विकास

शरणानन्दजी का निर्वाण दिवस 25.12.1974 ऐसा चमत्कारी था कि उस दिन क्रिसमस, ईद व गीताजयंती (मोक्षदा एकादशी) एक साथ थी। Humanity's Own Sharnanandji.